H.M. Zelawat
Advocate

Ph. :Off. 2536136
Res. 2556132

Off. : 39, Sikkh Mohalla, Raj Apartment, 1st Floor, Near Gurudwara, Indore-452007. Resi. : 9, Anoop Nagar, Indore-452008.

07.10.2010

प्रिय मनोज जी एवं चि. कु. रश्मि धाजेड़

सप्रेम नमस्कार एवं शुभाशीष.

"काशी मरणान्मुक्ति" आपकी कृति या कहूँ ग्रंथ मेरे हाथ मे है। इसे कृति कहूँ, ग्रंथ कहूँ या शास्त्र। पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है, कि आपकी लेखनी और शब्दो में परमात्मा या यूँ कहाँ जाए कि शिर्डी के सत्य साँई बाबा ने प्रकट होकर एक-एक शब्द में दर्शन दिए है।

कहानी एक ही है ओर नायक भी एक ही किन्तु एक ही नायक के दो रूप एक ख्याता दूसरा अज्ञात।

रात्री के गहन अन्धकार में मणिकर्णिका "घाटलमहा" के मन मे द्वंद है, लेकिन श्रद्धा को जन्म देती है।

अज्ञात के अंधकार मे एक नवजात शिशु को जननी माँ. हरे वस्त्र मे लपेटे हुए छोड़ जाती है, और कालसर्प उसकी रक्षा करता है कि कहीं उसे किसी प्रकार से हानि न पहुँचे. ऐसा प्रतीत होता है काशी विश्वनाथ इस जीव की स्वयं से एकाकार कर रक्षा कर रहे है।

याने यूँ कहें काला नाग फन फैलाये इस शिशु की कि श्वानों एवं सियारों से रक्षा कर रहा था। यह श्रेष्ठ चित्रण है।

आगे के वर्णन मे इस स्थिति मे एक पर्णकुटी में एक लेटी हुई स्त्री के अर्तमन मे मचली हुई उथल-पुथल स्थिति मे अपने गोदी मे ममता का प्यार उड़ेल

H.M. Zelawat
Advocates

Ph. :Off. 2536136
Res. 2556132

Off. : 39, Sikkh Mohalla, Raj Apartment, 1st Floor, Near Gurudwara, Indore-452007. Resi. : 9, Anoop Nagar, Indore-452008.

कर अपने मे शिशु को समाहित कर लेती है, और स्त्री का नाम यशोदा है, और उसके पति का नाम राघव है। यशोदा इसे अपना पुत्र मान अपने साथ पुष्पमाऊँ गाँव ले आती है।

कितना सुंदर स्वाभाविक चित्रण है। कुंडलीमार फन फैलाये कालानाग रक्षा कर अपना जैसे कर्तव्य निभाकर चला गया।

राघव यात्रियों को गंगा के इस पार से उस पार ले जाकर निर्वाह करता था, ओर उस संकिर्ण स्थिति में ब्राह्मण उसे दान दक्षिणा नही देते थे, क्योंकि वह पुत्र विहिन था।

कबीर की हिन्दु व इस्लाम धर्म पर छाप पात्रों के चरित्र पर साफ झलकती है. उत्कृष्ट छवि है।

अगर इस पुस्तक को कृति, ग्रंथ या वर्तमान का शास्त्र कहाँ जाए तो अतिश्योक्ति नही होगी।

सत्यम् शिवम् सुन्दरम् एक ही रुप मे स्पस्ट प्रतीत होता है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश एक ही आकृति मे पुस्तक की परिभाषा में झलकता है, यह अपने आप में ग्रंथ है, ओर इसे "पंथ" भी कह सकते है, विश्वनाथ के मंदिर से पाठक पूरे काशी मे गंगा तट से लेकर काशी की गलियों व विश्वनाथ की संपूर्ण यात्रा कर लेता है, प्रत्येक चरित्र अपने आप में "शिव" की झलक देता है।

...3

H.M. Zelawat
Advocates

Ph. :Off. 2536136
Res. 2556132

Off. : 39, Sikkh Mohalla, Raj Apartment, 1st Floor, Near Gurudwara, Indore-452007. Resi. : 9, Anoop Nagar, Indore-452008.

उत्कृष्ट कृति है। इसमें अध्यात्म भी है, गुरु
की वाणी भी, और शिव का कलेवर भी है।

पुरी पुस्तक उत्कृष्ट है, भाषा का सौष्ठव अपूर्व
है व विद्वत्ता झलकती है।

पुस्तक इतनी उत्कृष्ट है कि इसमें शास्त्रार्थ को
जन्म दे सकता है। जो एक शुभ संकेत है।

आपदोनों को बधाईयाँ एवं साधुवाद।

शुभकामनाओं सहित,

आपका स्नेही
हस्तीमल झैलावत।

(हस्तीमल झैलावत)